कैफे चलाने से लेकर प्रमाण पत्र बनातीं महिलाएं

महिला समूह के जरिए राज्य के ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं न सिर्फ संगठित हो रही हैं, बल्कि आजीविका से जुड़कर खुद के पैरों पर खड़ा भी हो रही हैं. जो महिलाएं खेती-बारी के लिए पूरा वक्त नहीं निकाल पा रही हैं, उनके लिए वैकल्पिक खेती की व्यवस्था के जरिये फूलों की खेती करायी जा रही है. साथ ही कृषि व्यवसाय से जुड़ी सखी मंडल की महिलाओं को प्रशिक्षण भी दिया जा रहा है. नयी महिलाएं भी समूहों से जुड़ें, समूह का काम-काज सही तरीके से देख-रेख करें, इसके लिए उन्हें भी प्रशिक्षित किया जा रहा है. अब ग्रामीण महिलाएं आजीविका कैफे के सहारे दूसरों को खाना खिला रही हैं, वहीं कई महिलाएं विभिन्न प्रमाण पत्र बनाने में मददगार साबित हो रही हैं.

मधुमक्खी पालन का मिला प्रशिक्षण

महिलाओं को मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण देते बंदी उरांव.

रांची जिलांतर्गत कांके प्रखंड के चंदवे पंचायत स्थित दुबलिया गांव में मधुमक्खी पालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन हुआ. इसका उद्देश्य सखी मंडल की दीदियों को स्वरोजगार से जोड़कर आत्मनिर्भर बनाना है. इस गांव की सखी मंडल की महिलाएं अपनी आजीविका को बढ़ाने के लिए हमेशा तत्पर रहती हैं. जेएसएलपीएस से माध्यम से आज इस गांव की महिलाएं इतनी मजबूत और जागरूक हो गयी हैं कि अब हर कोई उन्हें नयी-नयी चीजों का प्रशिक्षण देना चाहता है. महिलाओं की लगन को देखते हुए आदिवासी समाज के सदस्य चाला अखड़ा खोड़ा के अध्यक्ष बंदी उरांव ने दुबलिया गांव में महिलाओं को मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण दिया. बंदी उरांव जिस संस्था के अध्यक्ष हैं, वो संस्था आदिवासी समाज के गरीब परिवारों को आजीविका से जोड़ कर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा होने के लिए सहयोग करती है. बंदी उरांव लोगों को महुआ का लड्डू बनाने व पशुपालन का प्रशिक्षण देते हैं. बंदी उरांव ने मधुमक्खी पालन का प्रशिक्षण दिया. इस दौरान उन्होंने महिलाओं को रानी मधुमक्खी, नर मधुमक्खी और श्रमिक मधुमक्खी के बारे में विस्तार से जानकारी दिया. साथ ही बताया कि इन मधुमक्खियों के कार्य क्या-क्या हैं. महिलाओं को बताया गया कि मधुमक्खी पालन के लिए बसंत का मौसम सबसे ज्यादा अनुकूल होता है, क्योंकि इस मौसम में श्रमिक मधुमक्खी फूलों का रस लाकर छत्ते में जमा करती हैं. साथ ही मधुमक्खी निकालने के बाद जो अवशेष प्राप्त होते हैं उससे मोम बनता है.

प्रीति लिंडा

प्रखंड	कांके
जिला	रांची

मधुमक्खी पालन के लिए सामग्री

- मधुमक्खी पालन के लिए लकड़ी के बक्से की आवश्यकता होती है, जो खासतौर पर मधुमक्खी पालन के लिए तैयार की जाती है.

इन बातों का रखें ध्यान

- मधु बक्से का मुंह हमेशा पूरब दिशा की ओर हो
- दो बक्सों के बीच की दूरी कम से कम दो से तीन मीटर हो
- मधु का निरीक्षण दोपहर 12 बजे से तीन बजे तक का है
- मधुबक्सों को फूलों की उपलब्धता के पास रखें
- मधुबक्सों के आस-पास स्वच्छता और ताजा पानी रखें
- अगर मधुमक्खियों की संख्या अधिक हो जाये, तो इसे एक बक्से से दूसरे बक्से में विभाजित कर दे
- मधुमक्खियों को कीट व चीटियों के प्रकोप से बचाएं

प्रशिक्षण लेने के बाद निशा ने बताया कि पहले उन्हें मधुमक्खियों से डर लगता था, पर अब डर खत्म हो गया है. अब वो मधुमक्खी पालन का कार्य करेंगी. प्रशिक्षण के बाद सभी महिलाएं काफी खुश दिखीं और सभी ने कहा कि वो मधुमक्खी पालन का कार्य शुरू करेंगी, वहीं कुछ महिलाओं ने मधुमक्खी पालन करना शुरू भी कर दिया है.

नुक्कड़ नाटक के जरिए महिला तस्करी रोकने का हो रहा प्रयास

अमिता देवी

प्रखंड	रनिया
जिला	खूंटी

ग्रामीण महिलाओं को मानव तस्करी को लेकर जागरूक करने के लिए खूंटी जिले के रनिया ब्लॉक चौक में नुक्कड़ नाटक का आयोजन किया गया. रांची के चुटिया से आयी टीम ने नुक्कड़ नाटक के जरिये ग्रामीणों को जागरूक करने का प्रयास किया. नाटक के दौरान गीत-संगीत के माध्यम से लोगों से मानव तस्करी के जाल में नहीं फंसने की अपील की गयी. नाटक के माध्यम से बताया गया कि किस तरह तस्कर महिलाओं को पैसे का प्रलोभन देकर बाहर ले जाते हैं. बाहर ले जाने के बाद किस तरीके से लड़कियों का शोषण किया जाता है. नुक्कड़ नाटक की टीम रनिया प्रखंड के 40 गांवों में जाकर ग्रामीणों को जागरूक करने का काम कर रही है. नाटक मंडली हर दिन चार गांवों में नुक्कड़ नाटक करती है. बीपीएम दिव्य ज्योति, प्रकाश कांत, सुजाता व सुमन होरो ने महिलाओं और लड़कियों से दलालों के चंगुल में नहीं फंसने की सलाह दी. नाटक को देख कर स्थानीय महिलाओं और लड़कियों ने दलाल के चंगुल में नहीं फंसने का संकल्प भी लिया. इस दौरान रनिया बीएम्एमयू के बीपीएम दिव्य ज्योति, प्रकाश कांत, सीसी दिनेश मुंडा, पंकज, आनंद, सुमन होरो, सुजाता समेत काफी संख्या में ग्रामीण मौजूद थे.

नुक्कड़ नाटक से ग्रामीणों को जागरूक करते नाटक मंडली के सदस्य.

समूह ने बदल दी परिवार की तकदीर

सुमन किस्पोट्टा

प्रखंड	नामकुम
जिला	रांची

रांची जिला अंतर्गत नामकुम प्रखंड स्थित लोधमा गांव की रीना देवी समूह से जुड़ कर अपने परिवार की आर्थिक स्थिति में सुधार ला रही हैं. आठ सदस्यों के परिवार से संबंध रखने वाली रीना देवी का घर पति की कमाई पर निर्भर था, जिस कारण उन्हें आर्थिक परेशानियों से गुजरना पड़ता था. खेती से खाना-पीना तो हो जाता था, लेकिन पढ़ाई-लिखाई और अन्य खर्चों के लिए सोचना पड़ता था. इस बीच लोधमा में जेएसएलपीएस की ओर से सीआरपी की महिलाएं आयीं और गांव की महिलाओं को लेकर समूह बनाया. साल 2014 में रीना देवी शांति महिला समूह से बतौर अध्यक्ष जुड़ गयीं और बुक कीपिंग का भी काम करने लगीं. समूह से जुड़ने के बाद रीना देवी ने समूह से छोटे-बड़े लोन मिला कर कुल 65 हजार रुपये का लोन लिया और गाय पालन की शुरुआत की. आज उनके पास छोटी-बड़ी कुल मिला कर 15 गाय हैं और हर रोज रीना देवी 15 लीटर दूध बेचती हैं. इससे उन्हें काफी मुनाफा भी हो रहा है. इसके अलावा रीना गोबर भी बेचती हैं, उससे भी अच्छी कीमत मिल जाती है.

अपनी गाय के साथ समूह की सदस्य रीना देवी.

धीरे-धीरे पैसे कमा कर रीना ने 30 हजार रुपये का लोन चुकता कर दिया है. वहीं परिवार की आर्थिक स्थिति भी पहले की अपेक्षा सुधरने लगी है. रीना देवी की लगन और मेहनत को देखते हुए उन्हें ग्राम संगठन का सचिव चुना गया है. अपनी हर जिम्मेदारी को अच्छी तरह से निभाती हुई रीना कहती हैं कि समूह उनके लिए मां समान है, जो हमेशा अच्छे-बुरे समय में साथ रहती है.

समूह को दिया गया रिफ्रेशर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण के लिए जातीं सखी मंडल की सदस्य.

पश्चिमी सिंहभूम जिले के तांतनगर प्रखंड अंतर्गत अंगरडीहा गांव की अंगरडीहा आजीविका महिला संकुल संगठन में सखी मंडल की महिलाओं का चार दिवसीय प्रशिक्षण शिविर आयोजित हुआ. सीनियर सीआरपी ट्रेनर ने प्रशिक्षण दिया. इस प्रशिक्षण शिविर में अनंत महासंगठन अनंतपुरम, आंध्र प्रदेश की सीनियर सीआरपी एवं एसइआरपी एएमएस के द्वारा कलस्टर के पूरे नियमों को विस्तार से समझाया गया. कलस्टर के एजेंडे के अनुसार पूरी बात बतायी गयी. इस दौरान कलस्टर संगठन में बैठने का तरीका, संकुल संगठन के पदाधिकारियों की जिम्मेदारी, लेखापाल की जिम्मेदारी और र

सुशीला देवी

प्रखंड	तांतनगर
जिला	प सिंहभूम

सीएलएफ की ग्रेडिंग के बारे में भी जानकारी दी गयी. सामुदायिक निवेश कोष को संचालित करने, प्राप्त और भुगतान को वापस करने, पुस्तक लेखन जैसी कई चीजों की जानकारी दी गयी. इसके अलावा आजीविका को कैसे बढ़ाया जाए, इस पर भी चर्चा की गयी.

इन बातों पर दिया गया विशेष ध्यान : सीएलएफ की सामग्री, समाचार के बारे में चर्चा, सीएलएफ में रिफ्रेशर बैठक करना और बात करने के तरीके के बारे में बताया गया. आइसीआरपी के द्वारा समूह के सदस्यों को जिम्मेदारी के बारे में बताया गया और सखी मंडल की कार्यवाही को ईसी की बैठक में जमा करने की जानकारी दी गयी. 12 ग्राम संगठन की महिलाओं को जीबी की बैठक में उपस्थित होने का सुझाव दिया गया. साथ ही हर महीने जीबी की बैठक करने का सुझाव दिया गया. कलस्टर की बैठक में देर से आनेवाली महिलाओं से 20 रुपये आर्थिक दंड लिए जाने की सूचना भी प्रशिक्षण में दी गयी. साथ ही सीएलएफ की बैठक में अनुपस्थित महिलाओं से 50 रुपये आर्थिक दंड लेने का प्रावधान रखा गया. ग्राम संगठन के डीसीबी नहीं लाने पर महिलाओं के लिए 50 रुपये आर्थिक दंड का प्रावधान रखा गया. लेखापाल सीएलएफ को 15 पुस्तक लिखने का सुझाव प्रशिक्षण के दौरान रखा गया. साथ ही बताया गया कि पुस्तक लिखने के बाद सीएलएफ की आय से लेखापाल का मानदेय दिया जाता है. प्रशिक्षण के दौरान यह सुझाव दिया गया कि अगर वीओए, बीके और ग्राम संगठन के पदाधिकारियों को इस प्रशिक्षण में कुछ समझने में परेशानी हुई है, तो वो फिर से रिफ्रेशर प्रशिक्षण दे सकते हैं. कलस्टर की अध्यक्ष ने ईसी सदस्यों व पदाधिकारियों को समय पर काम करने के बारे में बताया. प्रशिक्षण पाकर सखी मंडल की महिलाएं काफी खुश दिखीं. कई दीदियों ने कहा कि अब उन्हें काम करने में कोई परेशानी नहीं होगी.

जन सेवा केंद्र के लिए प्रशिक्षण

जेएसएलपीएस की ओर से सखी मंडल की सदस्यों को आजीविका जन सेवा केंद्र का तीन दिवसीय प्रशिक्षण दिया गया. प्रशिक्षण शिविर में रांची, खूंटी और गोड्डा जिले के हर एक कलस्टर से सखी मंडल की दो-दो सदस्यों को शामिल किया गया. प्रशिक्षण के दौरान अब सरकारी सेवाएं कलस्टर ऑफिस से देने की बात कही. साथ ही झारसेवा, वित्तीय, पैन कार्ड, माइक्रो सूक्ष्म बीमा योजना, बीबीपीएस और एसबीआई म्यूचुअल फंड के बारे में बताया गया. झारसेवा के अंतर्गत जाति, स्थानीय, जन्म, मृत्यु और आय प्रमाण पत्र बनाये जाते हैं. प्रशिक्षण शिविर में वित्तीय सेवाओं के बारे में भी बताया गया. वित्तीय सेवाओं की जानकारी देते हुए पैसे के लेन-देन, एक बैंक से दूसरे बैंक में पैसे भेजना और आधार कार्ड से किस प्रकार पैसों की निकासी की जाये, इसके बारे में बताया गया. महिलाओं को माइक्रो सूक्ष्म बीमा के बारे में जानकारी देते हुए बताया गया कि यह बीमा काफी कम रकम किया जाता है. साथ ही मोबाइल रिचार्ज, डीटीएच, बिजली बिल जमा करने और रेलवे टिकट बुकिंग करने के बारे में भी बताया गया. प्रशिक्षण पाकर सभी महिलाएं काफी खुश हुईं.

सुनीता देवी

प्रखंड	कांके
जिला	रांची

फूल की खेती से महकता गांव

राजधानी रांची के अनगड़ा प्रखंड से 16 किलोमीटर दूर बीसा गोंदली टोला की हवाओं में गेंदा फूल की खुशबू बिखरी हुई है. खुशबू के साथ-साथ गेंदा फूल बीसा गोंदली टोला के कई परिवारों के चेहरे पर मुस्कान बिखेर रही है. मां संतोषी सखी मंडल से जुड़ीं जलेश्वरी देवी के चेहरे पर मुस्कुराहट देख आप खुशी का अंदाजा लगा सकते हैं. अब तो फूलों के सहारे उनकी जीविका भी चल रही है. साल 2013 में जलेश्वरी देवी मां संतोषी सखी मंडल से जुड़ गयी थीं. खेती-बारी का शौक रखनेवाली जलेश्वरी के पास खेती योग्य दो एकड़ जमीन है. वह ऐसी खेती करना चाहती थीं, जिसमें मेहनत कम हो और मुनाफा ज्यादा हो. जलेश्वरी की इस सोच को आजीविका मिशन ने सही रूप दिया. गांव की कृषि मित्र निभा ने जलेश्वरी देवी को गेंदा फूल की खेती करने की जानकारी देते हुए गेंदा फूल का पौधा दिया. गेंदा फूल की खेती करने का फायदा यह है कि इस खेती में मेहनत कम लगता है और मवेशी भी परेशान नहीं करते हैं. छह डिसमिल जमीन में गेंदा फूल की खेती शुरू की. फूल खिलने के बाद उसकी माला बना कर जलेश्वरी उसे 10 से 12 रुपये प्रति पीस के हिसाब से बेच रही हैं.

रूबी खातून

प्रखंड	अनगड़ा
जिला	रांची

बैंक सखी बनकर रिंकी संवार रही है अपनी जिंदगी

पलामू जिले के लेस्लीगंज प्रखंड की रिंकी महिला समूह से जुड़ कर बैंक सखी का काम कर रही हैं और अपने सपने को पूरा कर रही हैं. बच्चे अच्छे स्कूल में पढ़ रहे हैं. खुद भी स्नातक की पढ़ाई कर रही हैं. साल 2016 में रोशनी आजीविका सखी मंडल से रिंकी जुड़ीं. इंटर तक पढ़े होने के कारण उन्हें समूह में बुक कीपिंग का काम मिल गया. समूह में वो लेखा-जोखा का काम करती थीं और प्रत्येक सप्ताह 10 रुपये का बचत करती हैं. इसी बीच रिंकी ने समूह से 15 हजार रुपये का लोन लिया और सिलाई मशीन खरीद कर सिलाई का काम करने लगीं. समूह से लिए लोन को चुकता करने के बाद अपने काम को और बढ़ाने के लिए 20 हजार रुपये का लोन लीं. इसी दौरान रिंकी को बैंक सखी के चयन के बारे में जानकारी मिली. हालांकि, रिंकी के सास-ससुर उनके काम करने के खिलाफ थे, लेकिन पति के सहयोग से रिंकी ने बैंक सखी की परीक्षा पास की और काम करने लगीं. अब तो रिंकी की बैंक सखी के रूप में अच्छी पहचान बन गयी है. रिंकी बताती हैं कि पहले उन्हें बैंक जाने में डर लगता था, लेकिन अब वो बैंक से लेन-देन का काम अच्छी तरह कर लेती हैं. बैंक सखी के आ जाने से सखी मंडल की महिलाओं को भी अब बैंक का काम करने में आसानी हो गयी है. मानदेय के तौर पर रिंकी को जेएसएलपीएस की ओर से तीन हजार रुपये और बैंक द्वारा दो हजार रुपये यानी कुल पांच हजार रुपये की आमदनी हो जाती है. अब रिंकी ने खुद के लिए एक स्कूटी भी खरीद ली और परिवार के साथ खुशहाल जिंदगी जी रही हैं.

नयनतारा कुमारी

प्रखंड	लेस्लीगंज
जिला	पलामू

समूह ने बदले आर्थिक हालात

पलामू जिला अंतर्गत मेदिनीनगर प्रखंड स्थित चियांकी पंचायत की महादेव माड़ा टोला की अंजना देवी अपनी मेहनत के दम पर खुद को गरीबी से बाहर निकाल चुकी हैं और पूरे गांव के लिए प्रेरणा स्त्रोत बन गयी हैं. अब अंजना देवी को अपनी जरूरतों के लिए किसी के आगे हाथ नहीं फैलाना पड़ता है. अभी जैसे हालात पहले नहीं थे. समूह से जुड़ने से पहले उनकी आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं थी. साल 2014 में अंजना देवी शारदा आजीविका सखी मंडल से जुड़ीं. इसके बाद गांव में सक्रिय महिला के पद के लिए चुनाव हुआ और अंजना देवी को सक्रिय महिला के तौर पर चुना गया. समूह से जुड़ने के बाद अंजना ने समूह से 20 हजार रुपये का लोन लिया और अपने पति के लिए किराने की दुकान खोलीं. किराने की दुकान के साथ-साथ कोल्ड ड्रिंक्स रखने का निर्णय लिया. इसके लिए फ्रिज की जरूरत थी. वह समूह से 10 हजार रुपये लोन लेकर फ्रिज खरीदीं. अंजना के पति की मेहनत से दुकान चल निकली और और हर महीने पांच से सात हजार रुपये की आमदनी होने लगी. फिर तीन हजार रुपये का समूह से लोन लेकर एक बकरी खरीदी हैं, जिससे आज बकरियों की संख्या तीन हो गयी है. इसी बीच उनके पति की तबीयत खराब हो गयी. इलाज में काफी रुपये खर्च हुए. अंजना ने हिम्मत नहीं हारी और समूह से फिर 10 हजार रुपये लोन लेकर अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा दिला रही है और खुद रानीमिस्त्री का काम कर अच्छी जिंदगी जी रही है.

ममता देवी

प्रखंड	मेदिनीनगर
जिला	पलामू